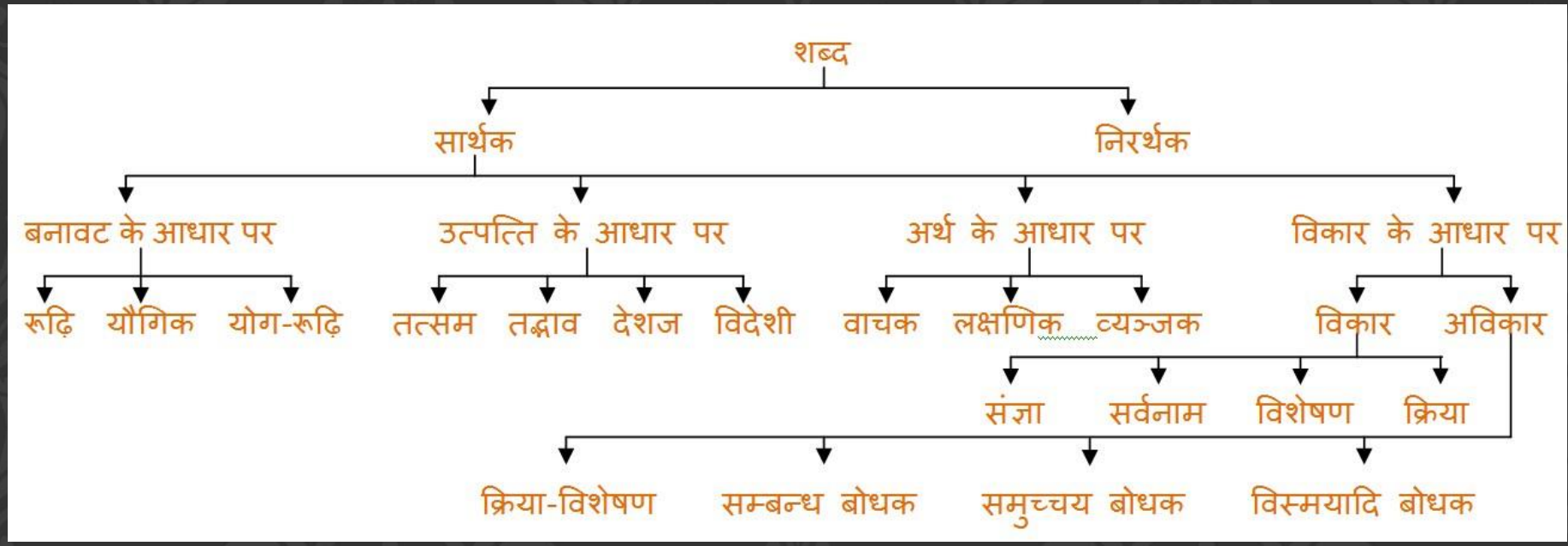
शब्द
सार्थक
निरर्थक
बनावट के आधार पर
उत्पत्ति के आधार पर
अर्थ के आधार पर
विकार के आधार पर
रूढ़ि
यौगिक
योग-रूढ़ि
तत्सम
तद्भाव
देशज
विदेशी
वाचक
लक्षणिक
व्यञ्जक
विकार
अविकार
संज्ञा
सर्वनाम
विशेषण
क्रिया
क्रिया-विशेषण
सम्बन्ध बोधक
समुच्चय बोधक
विस्मयादि बोधक

कारक

हिंदी व्याकरण

कारक और उसके भेद

कारक की परिभाषा(Karak ki Paribhasha)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाए, उसे **कारक(Karak)** कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त शब्द आपस में सम्बद्ध होते हैं। क्रिया के साथ संज्ञा का सीधा सम्बन्ध ही **कारक** है। **कारक** को प्रकट करने के लिये संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो **चिन्ह** लगाये जाते हैं, उन्हें **विभक्तियाँ** कहते हैं।

कारक की परिभाषा(Karak ki Paribhasha)

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ जाना जाए, उसे **कारक(Karak)** कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त शब्द आपस में सम्बद्ध होते हैं। क्रिया के साथ संज्ञा का सीधा सम्बन्ध ही **कारक** है। **कारक** को प्रकट करने के लिये संज्ञा और सर्वनाम के साथ जो **चिन्ह** लगाये जाते हैं, उन्हें **विभक्तियाँ** कहते हैं।

जैसे – पेङ पर फल लगते हैं। इस वाक्य में **पेङ** कारकीय पद हैं और **'पर'** कारक सूचक **चिन्ह** अथवा **विभक्ति** है।

हिन्दी में **'आठ कारक'** माने गए हैं

कारक	विभक्तियाँ
1. कर्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से, द्वारा
4. सम्प्रदान	को, के लिये, हेतु
5. अपादान	से (अलग होने के अर्थ में)
6. सम्बन्ध	का, की, के, रा, री, रे
7. अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	हे! अरे! ऐ! ओ! हाय!

कर्ता कारक – Karta Karak

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से **क्रिया** के करने वाले का बोध हो, उसे **कर्ता कारक(Karta Karak)** कहते हैं। इसका चिन्ह **'ने'** कभी कर्ता के साथ लगता है, और कभी वाक्य में **नहीं** होता है,अर्थात लुप्त होता है ।

कर्ता कारक उदाहरण –

- रमेश **ने** पुस्तक पढ़ी।
- सुनील खेलता है।
- पक्षी उड़ता है।
- मोहन ने पत्र पढ़ा।

इन वाक्यों में **'रमेश', 'सुनील'** और **'पक्षी'** कर्ता कारक हैं, क्योंकि इनके द्वारा क्रिया के करने वाले का बोध होता है।

कर्मकारक – karm Karak

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप पर **क्रिया का प्रभाव या फल** पड़े, उसे **कर्म कारक(Karm Karak)** कहते हैं। **कर्म** के साथ **'को'** विभक्ति आती है। इसकी यही सबसे बड़ी **पहचान** होती है। कभी-कभी वाक्यों में **'को'** विभक्ति का लोप भी हो जाया करता है।

कर्म कारक के उदाहरण – Karm Karak ke Udaharan

- उसने सुनील **को** पढ़ाया।
- मोहन ने चोर **को** पकड़ा।
- लड़की ने लड़के **को** देखा।
- कविता पुस्तक पढ़ रही है।

करण कारक – Karan Karak

जिस **साधन** से अथवा जिसके द्वारा **क्रिया** पूरी की जाती है, उस संज्ञा को **करण कारक(Karan Karak)** कहते हैं।

इसकी मुख्य पहचान **'से'** अथवा **'द्वारा'** है

करण कारक के उदाहरण – Karan Karak ke Udaharan

- रहीम गेंद **से** खेलता है।
- आदमी चोर को लाठी **द्वारा** मारता है।

यहाँ **'गेंद से'** और **'लाठी द्वारा'** करणकारक है।

सम्प्रदान कारक – Samprdaan Karak

जिसके लिए **क्रिया** की जाती है, उसे **सम्प्रदान कारक(Samprdaan Karak)** कहते हैं। इसमें कर्म कारक **'को'** भी प्रयुक्त होता है, किन्तु उसका अर्थ **'के लिये'** होता है।

करण कारक के उदाहरण – Sampradan Karak ke Udaharan

- सुनील रवि **के लिए** गेंद लाता है।
- हम पढ़ने **के लिए** स्कूल जाते हैं।
- माँ बच्चे **को** खिलौना देती है।

उपरोक्त वाक्यों में **'मोहन के लिये' 'पढ़ने के लिए'** और **बच्चे को** सम्प्रदान है।

अपादान कारक – Apadaan Karak

अपादान का अर्थ है- **अलग होना**। जिस **संज्ञा** अथवा सर्वनाम से किसी **वस्तु का अलग होना** ज्ञात हो, उसे **अपादान कारक(Apadaan Karak)** कहते हैं।

करण कारक की भाँति अपादान कारक का चिन्ह भी **'से'** है, परन्तु करण कारक में इसका अर्थ **सहायता** होता है और अपादान में **अलग होना** होता है।

अपादान कारक के उदाहरण – Apadan Karak ke Udaharan

- हिमालय **से** गंगा निकलती है।
- वृक्ष **से** पत्ता गिरता है।
- राहुल छत **से** गिरता है।

इन वाक्यों में **'हिमालय से', 'वृक्ष से', 'छत से '** अपादान कारक है।

सम्बन्ध कारक -Sambandh Karak

संज्ञा अथवा **सर्वनाम** के जिस रूप से **एक वस्तु का सम्बन्ध दूसरी वस्तु से** जाना जाये, उसे **सम्बन्ध कारक(Sambandh Karak)** कहते हैं।

इसकी मुख्य पहचान है – **'का', 'की', के**।

सम्बन्ध कारक के उदाहरण – Sambandh Karak ke Udaharan

- राहुल **की** किताब मेज पर है।
- सुनीता **का** घर दूर है।

सम्बन्ध कारक क्रिया से भिन्न शब्द के साथ ही **सम्बन्ध** सूचित करता है।

अधिकरण कारक – Adhikaran Karak

संज्ञा के जिस रूप से **क्रिया के आधार का बोध** होता है, उसे **अधिकरण कारक(Adhikaran Karak)** कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान है **'में', 'पर'** होती है ।

अधिकरण कारक के उदाहरण – Adhikaran Karak ke Udaharan

- घर **पर** माँ है।
- घोंसले **में** चिड़िया है।
- सड़क **पर** गाड़ी खड़ी है।

यहाँ **'घर पर', 'घोंसले में', और 'सड़क पर'**, अधिकरण है।

सम्बोधन कारक – Sambodhan kaarak

संज्ञा या जिस रूप से **किसी को पुकारने तथा सावधान करने का बोध** हो, उसे **सम्बोधन कारक(Sambodhan kaarak)** कहते हैं।

इसका सम्बन्ध न क्रिया से और न किसी दूसरे शब्द से होता है। यह **वाक्य से अलग** रहता है। इसका कोई **कारक चिन्ह** भी नहीं है।

सम्बोधन कारक के उदाहरण – Sambodhan Karak ke Udaharan

- खबरदार !
- रीना को मत मारो।
- रमा ! देखो कैसा सुन्दर दृश्य है।
- लङके ! जरा इधर आ।

काल

काल का अर्थ हम “समय “से लेते है।

अर्थात क्रिया के जिस रूप से हमें काम के होने के समय का बोध हो उसे काल कहते है।

काल से हमें कार्य के समय का ज्ञान होता है। और कार्य के सही समय का पता चलता है कि काम अभी हो रहा है या पहले हुआ था या आने वाले समय मे होगा।

काल की परिभाषा –

क्रिया के उस रूपांतर को ’काल’ कहते हैं, जिससे कार्य-व्यापार का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो।

काल के भेद

काल के तीन भेद हैं –

1.वर्तमानकाल -(present Tense) - जो समय चल रहा है।
2.भूतकाल -(Past Tense) - जो समय बीत चुका है।
3.भविष्यतकाल -(Future Tense) - जो समय आने वाला है।

वर्तमान काल के भेद

वर्तमान काल के तीन भेद होते है-

(i)सामान्य वर्तमानकाल
(ii)तत्कालिक वर्तमानकाल या अपूर्ण वर्तमानकाल
(iii) संदिग्ध वर्तमानकाल

भूतकाल के भेद

भूतकाल के छह भेद होते है-

(i)सामान्य भूतकाल
(ii)आसन भूतकाल
(iii)पूर्ण भूतकाल
(iv)अपूर्ण भूतकाल
(v)संदिग्ध भूतकाल
(vi)हेतुहेतुमद् भूत

भविष्यत काल के भेद

भविष्यतकाल के दो भेद होते है-

(i)सामान्य भविष्यत काल
(ii)सम्भाव्य भविष्यत काल

1.वर्तमानकाल -(present Tense) - जो समय चल रहा है।

(i)सामान्य वर्तमानकाल
(ii)तत्कालिक वर्तमानकाल या अपूर्ण वर्तमानकाल
(iii) संदिग्ध वर्तमानकाल

1. सामान्य वर्तमानकाल किसे कहते है –

क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमानकाल में होना पाया जाए, 'सामान्य वर्तमान' कहलाता है।
जैसे –
वह आता है ।
वह देखता है।
पक्षी आकाश में उड़ते है।

2. तत्कालिक वर्तमानकाल किसे कहते है –

क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि कार्य वर्तमानकाल में हो रही है उसे तात्कालिक वर्तमानकाल कहते हैं।
जैसे- मै पढ़ रहा हूँ। वह जा रहा है।

3.संदिग्ध वर्तमानकाल वर्तमानकाल किसे कहते है –

जिससे क्रिया के होने में सन्देह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानकाल में सन्देह न हो। उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे-
'माँ खाना बना रही होगी। वाक्य में 'रही होगी' से खाना बनाने के कार्य को निश्चित रूप से नहीं कहा गया, उसमें संदेह की स्थिति बनी हुई है, अतः यहाँ संदिग्ध वर्तमान है।
राम पढ़ता होगा।
हलवाई मिठाई बनाता होगा।
आज विद्यालय खुला होगा।

कारक

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका संबंध प्रकट हो उसे कारक कहते हैं। जैसे —

राम ने रावण को मारा।

इस वाक्य में राम ने, रावण को आदि संज्ञा के विभिन्न रूप हैं।

ने, को विभक्ति चिह्न हैं।

हिन्दी में आठ कारक हैं। जिनके अपने विभक्ति चिह्न भी हैं।

जैसे -

	कारक	विभक्ति चिह्न
1.	कर्ताकारक	- ने
2.	कर्मकारक	- को

3. करण कारक - से
4. सम्प्रदान कारक - को, के लिए, के वास्ते
5. अपादान कारक - से
6. संबंध कारक - का, के, की
7. अधिकरण कारक - में, पर
8. सम्बोधन कारक - हे, अरे

1. कर्ताकारक :—

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से कार्य करनेवाले का बोध होता है, उसे कर्ताकारक कहते हैं। कर्ताकारक की विभक्ति ने है। किन्तु बिना विभक्ति के भी इसका प्रयोग होता है।

जैसे - राम ने रावण को मारा।
राधा नाचती है।

राम ने, राधा - कर्ताकारक है।

2. कर्म कारक :—

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के व्यापार का फल या प्रभाव जिस व्यक्ति अथवा वस्तु पर पड़ता है, उसका बोध करानेवाले को कर्म कारक कहते हैं। 'को' इसका विभक्ति चिह्न है।

जैसे -

राम ने रावण को मारा।

मोहन ने राम को बुलाया

रावण को, राम को — कर्म कारक हैं।

बिना विभक्ति के भी इसका प्रयोग होता है। जैसे —

मोहन ने दूध पिया

[दूध्या अप्राणिवाचक शब्दों के साथ 'को' नहीं जुड़ता।]

3. करण कारक :—

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है उसे करण कारक कहते हैं। करण कारण की विभक्ति 'से' है। जैसे :—

(1) लड़का कलम से लिखता है।

राम ने रावण को बाण से मारा।

कलम से, बाण से - करण कारक है।

'लिखना' क्रिया का साधन 'कलम'

'मारना' क्रिया का साधन 'बाण'

क्रिया(Verb)

क्रिया(Verb) की परिभाषा

जिस शब्द के द्वारा किसी कार्य के करने या होने का बोध होता है उसे क्रिया कहते है।
जैसे- पढ़ना, खाना, पीना, जाना इत्यादि।

धातु की परिभाषा- क्रिया के मूल रूप को धातु कहते है।
मूल धातु में 'ना' प्रत्यय लगाने से क्रिया का सामान्य रूप बनता है।
जैसे-

धातु रूप	सामान्य रूप
बोल, पढ़, घूम,	बोलना, पढ़ना, घूमना,
लिख, गा, हँस, देख	लिखना, गाना, हँसना, देखना

मुख्यतः क्रिया के दो प्रकार होते हैं-

1. **सकर्मक क्रिया**
   “जिस क्रिया का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, उसे ‘सकर्मक क्रिया’ (Transitive verb) कहते हैं।”
2. **अकर्मक क्रिया**
   “वह क्रिया, जो अपने साथ कर्म नहीं लाये अर्थात् जिस क्रिया का फल या व्यापार कर्ता पर ही पड़े, वह अकर्मक क्रिया (Intransitive Verb) कहलाती है।”

जैसे-

1. उसका सिर खुजलाता है। (अकर्मक)

2. वह अपना सिर खुजलाता है। (सकर्मक)

सकर्मक क्रिया और अकर्मक क्रिया में अंतर :-

सकर्मक क्रिया	अकर्मक क्रिया
1. इसमें कर्ता, क्रिया और कर्म तीनों उपस्थित होते हैं।	1. इसमें कर्ता और क्रिया तो होते हैं, लेकिन कर्म नहीं होता।
2. इसमें कर्ता द्वारा किए गए कार्य से कोई दूसरी चीज प्रभावित होती है	2. इसमें कर्ता द्वारा किए गए कार्य से किसी और चीज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
3. जैसे– नरेंद्र खाता है।	3. जैसे– नरेंद्र खाना खाता है।

सकर्मक क्रिया – ***वाक्य में क्रिया शब्द से पहले “क्या “,“ किसे ”, किसको ”प्रश्न करने पर यदि कोई उत्तर मिलता है तो वह सकर्मक क्रिया।***

अकर्मक क्रिया- ***यदि कोई उत्तर*** **ना** ***मिलता है तो वह*** **अकर्मक क्रिया।**

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान

सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं की पहचान 'क्या', 'किसे' या 'किसको' आदि प्रश्न करने से होती है। यदि कुछ उत्तर मिले तो समझना चाहिए कि क्रिया सकर्मक है और यदि न मिले तो अकर्मक होगी। उदाहरण के लिए 'पढ़ता है' क्रिया से 'क्या पढ़ता है' प्रश्न किये जाने पर उत्तर मिलेगा–'हिन्दी पढ़ता है', 'तमिल पढ़ता है' आदि। अतः 'पढ़ता है' सकर्मक क्रिया है। इसी प्रकार 'आता है' और 'जाता है' क्रिया से 'क्या', 'किसे', 'किसको' लगातार प्रश्न किये जाने पर कोई उत्तर नहीं मिलता। अतः ये क्रियाएँ अकर्मक हैं।

सकर्मक क्रिया के भेद –

1. एककर्मक क्रिया

2. द्विकर्मक क्रिया

एक कर्मक क्रिया – जिस क्रिया का एक कर्म होता है उसे एककर्मक क्रिया कहते है।

राधा खीर खाती है।

राधा क्या खाती है?

उत्तर – खीर (कर्म)

द्विकर्मक क्रिया –

जिस क्रिया के दो कर्म होते है उसे द्विकर्मक क्रिया कहते है।

कभी कभी वाक्य में दो कर्म होते हैं एक गौण कर्म व दूसरा मुख्य कर्म।

गौण कर्म- यह क्रिया से दूर होता है **प्राणि वाचक** होता है तथा विभक्ति सहित होता है।
मुख्य कर्म- यह क्रिया के पास होता है, **अप्राणी वाचक** होता है, विभक्ति रहित होता है।

मोहन ने मुझे चित्र दिखाया।

मोहन ने किस को चित्र दिखाया?

उत्तर – मुझे

मोहन ने मुझे क्या चित्र दिखाया।

उत्तर – चित्र (कर्म)

भूतकाल
(Past Tense)

भूतकाल - जो समय बीत चुका है।

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते है।

भूतकाल के भेद

भूतकाल के छह भेद होते है-

(i)सामान्य भूतकाल (Simple Past)
(ii)आसन भूतकाल (Recent Past)
(iii)पूर्ण भूतकाल (Complete Past)
(iv)अपूर्ण भूतकाल (Incomplete Past)
(v)संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past)
(vi)हेतुहेतुमद् भूत (Conditional Past)

(i)सामान्य भूतकाल(Simple Past):-

जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

या

क्रिया के जिस रूप से काम के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का बोध हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

जैसे-

मोहन आया।
सीता गयी।

(ii)आसन्न भूतकाल(Recent Past):-क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे-
लड़कियाँ गई हैं।
मैं अभी सोकर उठी हूँ।
मोहन आया है ।
सीता गयी है ।
तुम चले हो।
सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ पुरुष, लिंग,वचन के अनुसार हैं, हूँ, है, हो जोड़ने से आसन्न भूतकाल बनता है।

(iii)पूर्ण भूतकाल(Complete Past):- क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते है, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है।

या

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य पहले ही पूरा हो चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

जैसे-
उसने श्याम को मारा **था**।
मोहन आया **था** ।
सीता गयी **थी** ।
लड़कियाँ गई **थीं**।
सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ लिंग,वचन के अनुसार **था, थे , थी, थीं** जोड़ने से **पूर्ण भूतकाल** बनता है।

(iv)अपूर्ण भूतकाल(Incomplete Past):- जिस क्रिया से यह ज्ञात हो कि भूतकाल में कार्य सम्पन्न नहीं हुआ था - अभी चल रहा था, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं।

जैसे-
सुरेश गीत गा रहा था।
मोहन आ रहा था।
सीता सो रही थी।
घंटियां बज रही थीं।
लड़कियाँ आ रही थीं।

सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ लिंग,वचन के अनुसार रहा था, रहे थे, रही थी , रही थीं जोड़ने से अपूर्ण भूतकाल बनता है।

(v)संदिग्ध भूतकाल(Doubtful Past):- भूतकाल की जिस क्रिया से कार्य होने में अनिश्चितता अथवा संदेह प्रकट हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते है। इसमें यह सन्देह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ या नही।

जैसे-

मोहन आया होगा ।
सीता गयी होगी ।
तू गाया होगा।
बस छूट गई होगी।
लड़कियाँ गयी होंगी।
सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ पुरुष, लिंग,वचन के अनुसार हूँगा, हूँगी, होगे, होगी , होगा , होंगे, होंगी जोड़ने से संदिग्ध भूतकाल बनता है।

(vi)हेतुहेतुमद् भूतकाल(Conditional Past):-जहां भूतकाल में क्रिया के न हो पाने के पीछे कोई हेतु (कारण) प्रकट किया गया हो, ऐसी क्रिया के काल को हेतुहेतुमद भूतकाल कहते है।

जैसे-

आप आते, तो हम साथ चलते।
बारिश होती तो मौसम बदल जाता।
तुम ठीक से सोचते तो ऐसे दिन न देखने पड़ते।

व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया के भेद

व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया के दो भेद हैं—
1. मूल धातु 2. यौगिक धातु।

मूल धातु—जो धातु दूसरी धातुओं से स्वतन्त्र रहकर प्रयुक्त हो, वह मूल धातु कहलाती है। जैसे—आ, जा, पढ़, लिख, चल आदि।

यौगिक धातु—जो धातु अन्य धातुओं से निर्मित होती है, यौगिक धातु कहलाती है। जैसे—

'गा' धातु में से 'गवा'।
'उठ' धातु में से 'उठा' और 'उठवा'।
'कर' धातु में से 'करा' और 'करवा'।

यौगिक धातु चार प्रकार की हैं—

1. **प्रेरणार्थक क्रिया**—जिस क्रिया के व्यापार में कर्त्ता कार्य स्वयं न करके केवल करने की प्रेरणा देता है, उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं। जैसे—करवाना, लिखवाना, पढ़वाना आदि।

प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के कुछ नियम इस प्रकार हैं—

1. सकर्मक धातु के दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके धातु में 'ला' और 'लवा' जोड़कर क्रमशः द्विकर्मक क्रिया और प्रेरणार्थक क्रिया बनायी जाती है। जैसे—

मूल क्रिया	द्विकर्मक क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
पीना	पिलाना	पिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
जीना	जिलाना	जिलवाना

2. मूल धातु में 'आ' और 'वा' जोड़ने से क्रमशः द्विकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। जैसे—

पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
चलना	चलाना	चलवाना
सुनना	सुनाना	सुनवाना

3. तीन अक्षर वाली कुछ अकर्मक धातुओं के दूसरे अक्षर को दीर्घ करके सकर्मक क्रिया तथा तृतीय वर्ण के आगे 'वाना' जोड़ने से प्रेरणार्थक क्रिया बनती है। जैसे—

अकर्मक क्रिया	सकर्मकम क्रिया	प्रेरणार्थक क्रिया
चमकना	चमकाना	चमकवाना
तड़पना	तड़पाना	तड़पवाना
निकलना	निकालना	निकलवाना

4. कुछ अकर्मक धातुओं के प्रथम अक्षर को दीर्घ करके 'सकर्मक' तथा मूल धातु में 'वा' जोड़कर प्रेरणार्थक क्रिया बनाई जाती है। जैसे—

लुटना	लूटना	लुटवाना
मरना	मारना	मरवाना
कटना	काटना	कटवाना

5. कुछ अकर्मक धातुओं से सकर्मक तथा प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के नियम निश्चित नहीं हैं। जैसे—

डूबना	डुबोना	डुबवाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना

नामधातु क्रिया

क्रिया के अतिरिक्त अन्य शब्दों में प्रत्यय जोड़कर जो क्रिया बनायी जाती है, उसे नामधातु क्रिया कहते हैं। जैसे—

रंग—रंगना
हाथ—हथियाना
अपना—अपनाना
स्वीकार—स्वीकारना
दुख—दुखाना
शर्म—शर्माना

संयुक्त क्रिया

दो या दो से अधिक धातुओं से मिलकर बननेवाली क्रियाएँ संयुक्त क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे—

खा जाना, चिल्ला उठना, कह देना आदि।

संयुक्त क्रिया के मुख्य भेद निम्नलिखित हैं—

1. **आरम्भबोधक**—जिस संयुक्त क्रिया से क्रिया के आरम्भ होने का बोध होता है उसे आरम्भबोधक संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे—

वह रोने लगा। लड़की नाचने लगी।

2. **समाप्तिबोधक**—जिस संयुक्त क्रिया से मुख्य क्रिया की समाप्ति का बोध हो, उसे समाप्तिबोधक कहते हैं। धातु के आगे 'चुकना' जोड़ने से समाप्तिबोधक क्रिया बनती है। जैसे— मैं खा चुका। लड़के खेल चुके।

3. **शक्तिबोधक**—इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है। धातु के आगे 'सकना' जोड़ने से शक्तिबोधक क्रिया बनती है। जैसे—

मैं तैर सकता हूँ। लड़कियाँ नाच सकती हैं।

निश्चयबोधक—जिस क्रिया से किसी कार्य के निश्चित रूप से करने या होने का बोध हो, उसे निश्चयबोधक कहते हैं। जैसे—

वे बोल उठे। लड़कियाँ चिल्ला उठीं। बच्चा गिर पड़ा।

अवकाशबोधक—जिससे क्रिया को निष्पन्न करने के लिए अवकाश का बोध हो, उसे अवकाशबोधक क्रिया कहते हैं। जैसे—

वह मुश्किल से पढ़ने पाया। बच्चा चलने नहीं पाया।

अनुमतिबोधक—जिससे कार्य करने की अनुमति दिये जाने का बोध हो, उसे अनुमतिबोधक क्रिया कहते हैं। जैसे—

मुझे पढ़ने दो। अध्यापक ने बच्चों को खेलने दिया।

नित्यताबोधक—जिससे कार्य की नित्यता, उसके बन्द न होने का भाव प्रकट हो, उसे नित्यताबोधक क्रिया कहते हैं। जैसे—

हवा चल रही है। धुआँ उड़ता रहा। बच्चे बोलते गये।

आवश्यकताबोधक—जिससे कार्य की आवश्यकता या कर्त्तव्य का बोध हो, उसे आवश्यकताबोधक क्रिया कहते हैं। मुख्य क्रिया के साथ 'पड़ना', 'होने' या 'चाहिए' जोड़ने से आवश्यकताबोधक क्रिया बनती है। जैसे—

मुझे भाषण देना पड़ा। हमको हिन्दी पढ़नी चाहिए। मुझे कल मुम्बई जाना है।

इच्छाबोधक—इससे क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है। क्रिया के साधारण रूप में 'चाहना' क्रिया जोड़ने से इच्छाबोधक संयुक्त क्रिया बनती है। जैसे—

मैं पढ़ना चाहता हूँ। लड़के खेलना चाहते हैं।

अभ्यासबोधक—इससे क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है। सामान्य भूतकाल की क्रिया में 'करना' क्रिया लगाने से अभ्यासबोधक संयुक्त क्रिया बनती है। जैसे — वह पढ़ा करता है। बच्चे रोया करते हैं। लड़की जाया करती है।

पुनरुक्त संयुक्त क्रिया—जब दो समानार्थक या समान ध्वनिवाली क्रियाओं का संयोग होता है, तब उन्हें पुनरुक्त संयुक्त क्रिया कहते हैं जैसे—

वह अपने पड़ोसियों से मिलता-जुलता रहता है। राम जंगल में घूमता-फिरता रहा।

सहायक क्रिया

मुख्य क्रिया के रूप को पूरा करनेवाली क्रियाएँ सहायक क्रियाएँ कहलाती हैं।

कभी एक क्रिया और कभी एक से अधिक क्रियाएँ सहायक होती है। जैसे–

वह जाता है। मैंने पढ़ा था। वे सोच रहे थे।

संयुक्त क्रियाओं में दूसरी क्रियाएँ–सकना, चुकना, लगना, पाना, देना, लेना, उठना, बैठना, डालना आदि भी सहायक क्रियाएँ होती हैं। हिन्दी में सहायक क्रियाओं का व्यापक प्रयोग होता है। इनके हेर-फेर से क्रिया का अर्थ भी बदल जाता है।

अभ्यास

1. क्रिया की परिभाषा लिखकर उदाहरण सहित समझाइए।
2. क्रिया का सामान्य रूप और धातु से क्या तात्पर्य है?
3. अकर्मक और सकर्मक क्रियाओं की परिभाषा दीजिए। उन्हें पहचानने का तरीका क्या है?
4. द्विकर्मक क्रिया से क्या तात्पर्य है? उदाहरण देकर समझाइए।
5. व्युत्पत्ति के अनुसार क्रिया के कितने भेद हैं? उदाहरण सहित समझाइए।
6. प्रेरणार्थक क्रिया बनाने के मुख्य नियम क्या-क्या हैं?
7. संयुक्त क्रिया के विविध रूपों का परिचय दीजिए।

क्रिया विशेषण

क्रिया-विशेषण

- जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं वे क्रिया-विशेषण कहलाते हैं।
- जैसे-

1.सोहन सुंदर लिखता है।

2.गौरव यहाँ रहता है।

3.संगीता प्रतिदिन पढ़ती है।

इन वाक्यों में 'सुन्दर', 'यहाँ' और 'प्रतिदिन' शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं। अतः ये शब्द क्रिया-विशेषण हैं।

क्रिया विशेषण के भेद / प्रकार

अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं:

- कालवाचक क्रियाविशेषण
- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

रूप के आधार पर क्रियाविशेषण के तीन भेद होते हैं :

1. मूल क्रियाविशेषण
2. स्थानीय क्रियाविशेषण
3. योगिक क्रियाविशेषण

प्रयोग के आधार पर क्रियाविशेषण के तीन भेद होते हैं :

1. साधारण क्रियाविशेषण
2. सयोंजक क्रियाविशेषण
3. अनुबद्ध क्रियाविशेषण

अर्थ के आधार पर क्रियाविशेषण के चार भेद होते हैं:

- कालवाचक क्रियाविशेषण
- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

1. कालवाचक क्रियाविशेषण:

वो क्रियाविशेषण शब्द जो क्रिया के होने के समय के बारे में बताते हैं, कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे:

•श्याम **कल** मेरे घर आया था।
•**परसों** बरसात होगी।
•मैंने **सुबह** खाना खाया था।
•मैं **शाम** को खेलता हूँ।
•मैं **सुबह** जल्दी उठता हूँ।
•मैं **दोपहर** में स्कूल से लौटता हूँ।
•हम अक्सर **शाम** को खेलने जाते हैं
•ऊपर दिए गए उदाहरणों में आप देख सकते हैं कि क्रिया शब्द जैसे आना, खाना, होना, उठना, लौटना आदि के होने क समय के बारे में कल, सुबह, शाम, दोपहर आदि शब्द बता रहे हैं। अतः यह शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आयेंगे।

2. रीतिवाचक क्रियाविशेषण

ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जो किसी क्रिया के होने की रीति या तरीके का बोध कराते हैं, वह शब्द रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

•सुरेश **ध्यान से** चलता है।
•वह **फटाफट** खाता है।
•उमेश **हमेशा सच** बोलता है।
•पियूष **अच्छी तरह** काम करता है।
•नरेन्द्र **ध्यान पूर्वक** पढ़ाई करता है।
•शेर **धीरे-धीरे** आगे बढ़ता है।

ऊपर दिए गए उदाहरणों में जैसा कि आप देख सकते हैं कि ध्यान से, फटाफट, हमेशा, सच, अच्छी तरह, ध्यान पूर्वक, धीरे-धीरे आदि शब्द खाना, चलना, बोलना आदि क्रियाओं कि विशेषता बता रहे हैं। अतः यह शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आयेंगे।

3. स्थानवाचक क्रियाविशेषण :

ऐसे अविकारी शब्द जो हमें क्रियाओं के होने के स्थान का बोध कराते हैं, वे शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **जैसे:**

•तुम **अन्दर** जाकर बैठो।
•मैं **बाहर** खेलता हूँ।
•हम **छत पर** सोते हैं।
•मैं **पेड़ पर** बैठा हूँ।
•शशि मुझसे **बहुत दूर** बैठी है।
•मुरारी **मैदान में** खेल रहा है।
•तुम अपने **दाहिने ओर** गिर जाओ।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरणों में देख सकते हैं कि अन्दर, बाहर, छत पर, पेड़ पर, दूर, मैदान में, दाहिने आदि शब्द हमें बैठना, खेलना, सोना, गिरना आदि क्रियाओं के होने के स्थान का बोध करा रहे हैं। हम यह भी जानते है की जब कोई शब्द हमें किसी क्रिया के होने के स्थान का बोध कराते हैं, ऐसे शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं।

4. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण

ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनसे हमें क्रिया के परिमाण, संख्या या मात्र का पता चलता है, वे शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे:

•तुम थोड़ा **अधिक** खाओ।
•अमृत बहुत **ज्यादा** दौड़ता है।
•मोहन **अधिक** खाना खाता है।
•आयुष उसके दोस्त से **ज्यादा** पढता है।
•अभी तक तुमने **पर्याप्त** नींद नहीं ली।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरणों में देख सकते हैं कि अधिक, ज्यादा, पर्याप्त आदि शब्द खाना, दौड़ना, सोना, पढ़ना आदि क्रियाओं का परिमाप या मात्र का बोध कराते हैं। परिभाषा से हमें यह जान पड़ता है कि ऐसे शब्द जो हमें क्रिया के होने की मात्रा एवं संख्या के बोध कराते हैं ऐसे शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं।

रूप के आधार पर क्रियाविशेषण के भेद

रूप के आधार पर क्रियाविशेषण के तीन भेद होते हैं :

1.मूल क्रियाविशेषण
2.स्थानीय क्रियाविशेषण
3.योगिक क्रियाविशेषण

. **मूल क्रियाविशेषण**

ऐसे शब्द जो दुसरे शब्दों के मेल से नहीं बनते यानी जो दुसरे शब्दों में प्रत्यय लगे बिना बन जाते हैं, वे शब्द मूल क्रियाविशेषण कहलाते हैं। **जैसे: – पास , दूर , ऊपर , आज , सदा , अचानक , फिर , नहीं , ठीक आदि।**

2. स्थानीय क्रियाविशेषण

ऐसे अन्य शब्द-भेद जो बिना अपने रूप में बदलाव किये किसी विशेष स्थान पर आते हैं, वे स्थानीय क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे:

•वह अपना **सिर** पढेगा।

•तुम **दौड़कर** चलते हो।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरणों में देख सकते हैं कि सिर, चलते आदि शब्दों के रूप में बिना बदलाव हुए ही वे विशेष स्थान पर प्रयोग किये गए। अतः यह स्थानीय क्रियाविशेषण के अंतर्गत आयेंगे।

3. योगिक क्रियाविशेषण

ऐसे क्रियाविशेषण जो किसी दुसरे शब्दों में प्रत्यय या पद आदि लगाने से बनते हैं, ऐसे क्रियाविशेषण योगिक क्रियाविशेषणों की श्रेणी में आते हैं।

•संज्ञा से यौगिक क्रियाविशेषण :-

जैसे :- सबेरे , सायं , आजन्म , क्रमशः , प्रेमपूर्वक , रातभर , मन से आदि।

•सर्वनाम से यौगिक क्रियाविशेषण :-

जैसे :- यहाँ , वहाँ , अब , कब , इतना , उतना , जहाँ , जिससे आदि।

•विशेषण से क्रियाविशेषण :-

जैसे :- चुपके , पहले , दूसरे , बहुधा , धीरे आदि।

•क्रिया से क्रियाविशेषण :-

जैसे :- खाते , पीते , सोते , उठते , बैठते , जागते आदि।

क्रिया विशेषण के बारे में यदि आपका कोई भी सवाल या सुझाव है तो उसे आप नीचे कमेंट में लिख सकते हैं।

प्रयोग के आधार पर क्रियाविशेषण के भेद

प्रयोग के आधार पर क्रियाविशेषण के तीन भेद होते हैं :

1.साधारण क्रियाविशेषण
2.सयोंजक क्रियाविशेषण
3.अनुबद्ध क्रियाविशेषण

1. साधारण क्रियाविशेषण

ऐसे क्रियाविशेषण शब्द जिनका प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र होता है, वे शब्द साधारण क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे:

•अरे! तुम कब आये ?
•हाय! यह क्या हो गया।
•अरे! वह लड़का कहाँ चला गया ?
•बेटा जल्दी आओ।
•ऊपर दिए गए उदाहरणों में जैसा कि आप देख सकते हैं कुछ शब्दों का प्रयोग वाक्य में स्वतंत्र होता है। यह शब्द साधारण क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

2. सयोंजक क्रियाविशेषण

•जिन क्रियाविशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्य से होता है , वह शब्द सयोंजक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

•जैसे :

•जहाँ तुम अभी खड़े हो, वहां घर हुआ करता था।

•जहां तुम जाओगे, वहीँ मैं जाऊँगा।

•यहाँ हम चल रहे हैं, वहां वो दौड़ रहे हैं।

जैसा कि आप ऊपर दिए गए उदाहरणों में देख सकते हैं कि दिए गए क्रियाविशेषणों का सम्बन्ध किसी उपवाक्य से है अतः यह क्रियाविशेषण शब्द सयोंजक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

3. अनुबद्ध क्रियाविशेषण

ऐसे शब्द जो निश्चय के लिए कहीं भी प्रयोग कर लिए जाते हैं वे शब्द अनुबद्ध क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

जैसे:

•यह काम तो गलत **ही** हुआ है।

•आपके आने **भर** की देर है।

जैसा कि आपने ऊपर दिए गए उदाहरणों में देखा कि भर,ही जैसे शब्दों का निश्चय के लिए कहीं भी प्रयोग हो जाता है। अतः यह शब्द अनुबद्ध क्रियाविशेषण के अंतर्गत आते हैं।

'ने' प्रत्यय का नियम और प्रयोग

हिंदी व्याकरण

☆भूतकालिक सकर्मक क्रिया के साथ 'ने' प्रत्य लगता है। सामान्य, आसन्न,पूर्ण,संदिग्ध भूतकालों में क्रिया सकर्मक होने पर 'ने' विभक्ति का प्रयोग कर्ता के साथ होता है ।

उदा:-

- गोविंद ने कविता पढ़ी।(सामान्य भूत)
- गोविंद ने कविता पढ़ी है।(आसन्न भूत)
- गोविंद ने कविता पढ़ी थी।(पूर्ण भूत)
- गोविंद ने कविता पढ़ी होगी।(संदिग्धभूत)

☆ कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया होती है।

उदा:-

◇रवि ने कविता सुनी।

◇लता ने पत्र लिखा।

◇राम ने चित्र देखा।

◇गोपाल ने दो फल खाये।इसलिए

उपर्युक्त वाक्यों में सभी क्रियाएँ (सुनी, लिखा,देखा, खाये) कर्म (कविता, पत्र,चित्र,दोफल) के लिंग, वचन के अनुसार लिखा गया।

☆जब कर्म का लोप होता है, तब क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है।

उदा:-

लड़के ने खरीदा।

लड़की ने खरीदा।

लड़कियों ने खरीदा।

लड़कों ने खरीदा।

शंकर ने खेला।

ज्योति ने खाया।

कृष्ण ने मारा।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में कर्म का लोप होता है।इसलिए उपर्युक्त सभी वाक्यों में प्रयुक्त सभी क्रियाएँ पुल्लिंग एकवचन में होती हैं।

☆जब कर्ता के साथ 'ने'विभक्ति और कर्म के साथ 'को'लगता है, तब क्रिया पुल्लिंग एकवचन में होती है।

उदा:-

लड़के ने बिल्ली को मारा।

☆बोल,भूल,ला, लग,सक,चुक=> इनके क्रियाओं का प्रयोग करते समय कर्ता के साथ 'ने' प्रत्यय नहीं लगता।

उदा:-

- **हम सभा में बोले।**
- **वह पाठ भूल गया।**
- **गोपाल बाज़ार से फल लाया।**
- **लड़के क्रिकेट खेलने लगे।**
- **मैं गेंद पकड़ सका।**
- **ललिता पत्र लिख चुकी।**

भविष्यत् काल

भविष्यत काल के भेद

भविष्यत् काल

क्रिया के जिस रूप से आनेवाले काल का बोध हो उसे भविष्यत् काल कहते हैं। इसके दो भेद हैं—1. सामान्य भविष्यत् 2. सम्भाव्य भविष्यत्।

सामान्य भविष्यत्—क्रिया का वह रूप जिससे सामान्य रीति से क्रिया के आगे होने की सूचना मिले, सामान्यत् भविष्य कहलाता है। धातु के साथ पुरुष, लिंग और वचन के अनुसार 'ऊँगा', 'ऊँगी, 'ओगे', 'ओगी', 'एगा', 'एगी', 'एँगे' तथा 'एँगी' जोड़ने से सामान्य भविष्यत् काल बनता है। जैसे—

मैं जाऊँगा। तुम चलोगे। लड़का खेलेगा। लड़के खेलेंगे।

'दे' और 'ले' धातुओं से सामान्य भविष्यत् कालिक रूप 'दूँगा', 'लूँगा', 'दोगे', 'लोगे', 'देंगे', 'लेगा' और 'लेंगे' हैं।

सम्भाव्य भविष्यत्—क्रिया के जिस रूप में क्रिया-व्यापार के भविष्यत् काल में होने की सम्भावना पायी जाय उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं। सामान्य भविष्यत् के रूप से 'गा', 'गे', 'गी' आदि पृथक् कर देने से सम्भाव्य भविष्यत् काल बनता है। जैसे—

ईश्वर हमारी रक्षा करे।

आज शायद पानी बरसे।

भूतकाल
(Past Tense)

भूतकाल - जो समय बीत चुका है।

क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते है।

भूतकाल के भेद

भूतकाल के छह भेद होते है-

(i)सामान्य भूतकाल (Simple Past)
(ii)आसन भूतकाल (Recent Past)
(iii)पूर्ण भूतकाल (Complete Past)
(iv)अपूर्ण भूतकाल (Incomplete Past)
(v)संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past)
(vi)हेतुहेतुमद् भूत (Conditional Past)

(i)सामान्य भूतकाल(Simple Past):-

जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

या

क्रिया के जिस रूप से काम के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का बोध हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

जैसे-

मोहन आया।
सीता गयी।

(ii)आसन्न भूतकाल(Recent Past):-क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे-
लड़कियाँ गई हैं।
मैं अभी सोकर उठी हूँ।
मोहन आया है ।
सीता गयी है ।
तुम चले हो।
सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ पुरुष, लिंग,वचन के अनुसार हैं, हूँ, है, हो जोड़ने से आसन्न भूतकाल बनता है।

(iii)पूर्ण भूतकाल(Complete Past):- क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते है, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है।

या

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य पहले ही पूरा हो चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

जैसे-
उसने श्याम को मारा **था**।
मोहन आया **था** ।
सीता गयी **थी** ।
लड़कियाँ गई **थीं**।
सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ लिंग,वचन के अनुसार **था, थे , थी, थीं** जोड़ने से **पूर्ण भूतकाल** बनता है।

(iv)अपूर्ण भूतकाल(Incomplete Past):- जिस क्रिया से यह ज्ञात हो कि भूतकाल में कार्य सम्पन्न नहीं हुआ था - अभी चल रहा था, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं।

जैसे-
सुरेश गीत गा रहा था।
मोहन आ रहा था।
सीता सो रही थी।
घंटियां बज रही थीं।
लड़कियाँ आ रही थीं।

सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ लिंग,वचन के अनुसार रहा था, रहे थे, रही थी , रही थीं जोड़ने से अपूर्ण भूतकाल बनता है।

(v)संदिग्ध भूतकाल(Doubtful Past):- भूतकाल की जिस क्रिया से कार्य होने में अनिश्चितता अथवा संदेह प्रकट हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते है। इसमें यह सन्देह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ या नही।

जैसे-

मोहन आया होगा ।
सीता गयी होगी ।
तू गाया होगा।
बस छूट गई होगी।
लड़कियाँ गयी होंगी।
सामान्य भूतकाल के क्रिया के साथ पुरुष, लिंग,वचन के अनुसार हूँगा, हूँगी, होगे, होगी , होगा , होंगे, होंगी जोड़ने से संदिग्ध भूतकाल बनता है।

(vi)हेतुहेतुमद् भूतकाल(Conditional Past):-जहां भूतकाल में क्रिया के न हो पाने के पीछे कोई हेतु (कारण) प्रकट किया गया हो, ऐसी क्रिया के काल को हेतुहेतुमद भूतकाल कहते है।

जैसे-

आप आते, तो हम साथ चलते।
बारिश होती तो मौसम बदल जाता।
तुम ठीक से सोचते तो ऐसे दिन न देखने पड़ते।

दाद्य

वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके द्वारा किए गए विधान का विषय **कर्ता** है, **कर्म** है या **भाव** है, उसे **वाच्य** कहते हैं।

वाच्य के भेद –वाच्य के **तीन** भेद होते हैं-

1. कर्तृवाच्य :–
जिस वाक्य में कर्ता मुख्य हो और क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरूष के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते है।
•राम पत्र लिखता है।
•सीता पुस्तक पढ़ती है।
2. कर्मवाच्य :–
जिस वाक्य में कर्म मुख्य हो तथा इसकी सकर्मक क्रिया के लिंग, वचन व पुरूष कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
•पत्र लिख जाता है।
•पुस्तक पढ़ी जाती है।

3. भाववाच्य :–
जिस वाक्य में कर्ता और कर्म को छोङकर भाव मुख्य हो, उसे भाववाच्य कहते हैं।
•उससे बैठा नहीं जाता।
•राम से खाया नहीं जाता।

1.कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ होती है।

2. कर्मवाच्य में क्रिया केवल सकर्मक होती हैं। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होता है। कर्मवाच्य का प्रयोग विधान और निषेध दोनों स्थितियों में होता है।

3. भाववाच्य में क्रियाएँ प्रायः अकर्मक होती हैं। इसकी क्रिया सदा एकवचन, अन्य पुरुष और पुल्लिंग में होती है। इसमें असमर्थता और निषेध होने से वाक्य प्रायः नकारात्मक होते हैं।

दाद्य

वाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि उसके द्वारा किए गए विधान का विषय **कर्ता** है, **कर्म** है या **भाव** है, उसे **वाच्य** कहते हैं।

वाच्य के भेद –वाच्य के **तीन** भेद होते हैं-

1. कर्तृवाच्य :–
जिस वाक्य में कर्ता मुख्य हो और क्रिया कर्ता के लिंग, वचन एवं पुरूष के अनुसार हो, उसे कर्तृवाच्य कहते है।
•राम पत्र लिखता है।
•सीता पुस्तक पढ़ती है।
2. कर्मवाच्य :–
जिस वाक्य में कर्म मुख्य हो तथा इसकी सकर्मक क्रिया के लिंग, वचन व पुरूष कर्म के अनुसार हो, उसे कर्मवाच्य कहते हैं।
•पत्र लिख जाता है।
•पुस्तक पढ़ी जाती है।

3. भाववाच्य :–
जिस वाक्य में कर्ता और कर्म को छोङकर भाव मुख्य हो, उसे भाववाच्य कहते हैं।
•उससे बैठा नहीं जाता।
•राम से खाया नहीं जाता।

1.कर्तृवाच्य में सकर्मक और अकर्मक दोनों क्रियाएँ होती है।

2. कर्मवाच्य में क्रिया केवल सकर्मक होती हैं। क्रिया का लिंग, वचन और पुरुष कर्म के अनुसार होता है। कर्मवाच्य का प्रयोग विधान और निषेध दोनों स्थितियों में होता है।

3. भाववाच्य में क्रियाएँ प्रायः अकर्मक होती हैं। इसकी क्रिया सदा एकवचन, अन्य पुरुष और पुल्लिंग में होती है। इसमें असमर्थता और निषेध होने से वाक्य प्रायः नकारात्मक होते हैं।

विशेषण-

संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द को विशेषण कहते हैं। यथा----
अच्छा लड़का, तीन पुस्तकें, नई कलम इत्यादि।
इनमे अच्छा, तीन और नई शब्द विशेषण है जो विशेष्य की विशेषता बतलाते हैं।

विशेषण विशेष्य

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता अर्थात गन दोष ,रंग, आकार ,संख्या ,परिणाम आदि का बोध हो ,उसे विशेषण कहते हैं। इसी तरह विशेषण शब्द के द्वारा जिस संज्ञा या सर्वनाम शब्द की विशेषता प्रकट होती , उसे विशेष्य के नाम से संबोधित करते हैं। जैसे -

१. सुन्दर लड़की खेल रही हैं।
२. वह सुन्दर है।
३. रमेश दयालू है।
४. वह दयालु है।

इन वाक्यों में सुंदर और दयालु शब्द विशेषण है। ये शब्द क्रमशः लड़की ,वह ,रमेश तथा वह शब्द की विशेषता बता रहे हैं। अतः ये विशेष्य है।

विशेषण के भेद

विशेषण के भेद : विशेषण मूलतः चार प्रकार के होते है-

- गुणवाचक विशेषण
- संख्यावाचक विशेषण
- परिमाणवाचक विशेषण
- सार्वनामिक विशेषण

1.गुणवाचक विशेषण

जो शब्द किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण, रंग, आकार, अवस्था, स्वभाव, दशा, दिशा, स्वाद आदि का बोध कराए, गुणवाचक विशेषण कहलाते हैं।

गुणवाचक विशेषण के उदाहरण –

- **गुण** : अच्छा, बुरा ,भला, सुशील, आलसी ,कर्मठ आदि।
- **रंग** : काला, लाल, हरा, पीला, सफेद, आदि।
- **कालबोधक** : नया, पुराना, ताजा, प्राचीन, नवीन आदि।
- **स्थानबोधक** : भारतीय, चीनी, राजस्थानी, जयपुरी, बिहारी, मद्रासी आदि।
- **दिशाबोधक** : पूर्वी, पश्चिमी, उत्तरी, दक्षिणी, भीतरी, बाहरी, ऊपरी आदि।
- **अवस्थाबोधक** : गीला, सूखा, जला हुआ, पिघला हुआ आदि।
- **दशाबोधक** : रोगी, स्वस्थ,अमीर, बीमार, सुखी, दुःखी, गरीब आदि।
- **आकारबोधक** : मोटा, छोटा, लम्बा, पतला, गोल, चपटा, आदि।
- **स्वादबोधक** : खट्टा, मीठा, कङवा, तीखा आदि।

2.संख्यावाचक विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध कराए उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते है।
जैसे :
मैदान में पाँच लङके खेल रहे है।
कक्षा में कुछ छात्र बैठे है।
उक्त उदाहरणों में 'पाँच' निश्चित संख्या तथा 'कुछ' अनिश्चित संख्या का बोध कराते है।

संख्यावाचक विशेषण के भेद

अतः संख्यावाचक विशेषण के दो भेद होते है :

•निश्चित संख्यावाचक विशेषण
•अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

* *निश्चित संख्यावाचक विशेषण*

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध हो।
जैसे : दस आदमी, पन्द्रह लङके, पचास रूपये आदि।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के भेद

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के भी प्रभेद होते हैं :
जैसे
गणनावाचक : एक, दो, तीन, चार.....
क्रमवाचक : पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा.....
आवृतिवाचक : दुगुना, तिगुना, चौगुना.....
समुदायवाचक : दोनों, तीनों, चारों.....

** अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण*

जिन विशेषण शब्दों से निश्चित संख्या का बोध न हो।

जैसे : कुछ आदमी, बहुत लङके, थोङे से रूपये आदि।

3. परिमाण वाचक विशेषण

जो शब्द किसी वस्तु के नाप, माप, तौल(परिमाण) का बोध कराते हैं, परिमाणवाचक विशेषण कहलाते है।
जैसे :
•थोड़ा दूध ।

• दस क्विंटल गेहूँ।

उक्त उदाहरणों में थोड़ा दूध अनिश्चयवाचक परिमाण तथा दस क्विंटल निश्चित परिमाण का बोध कराते हैं। इसी आधार पर परिमाणवाचक विशेषण के भी दो भेद होते हैं।

परिमाणवाचक विशेषण के भेद

- निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
- अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
जो निश्चित मात्रा का बोध कराये।
जैसे :
- **दो मीटर** कपड़ा
- **पाँच लीटर** तेल
- **एक क्विंटल** चावल आदि।

अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण
जो निश्चित मात्रा का बोध **न** कराये।

जैसे : **सारा** कपड़ा, **ज्यादा** लीटर तेल, **अधिक** चावल आदि।

संख्यावाचक एवं परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

- संख्यावाचक में गणना होती है जबकि परिमाणवाचक में नापा या तौला जाता है।
- संख्यावाचक में संख्या के बाद कोई संज्ञा या सर्वनाम शब्द होता है जबकि परिमाणवाचक में संख्या के बाद नाप, माप, तौल की इकाई होती है और उसके बाद पदार्थ (द्रव्यवाचक संज्ञा) होता है।

4.सार्वनामिक विशेषण

सर्वनाम शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते है जैसे :

•यह लड़की बहुत बुद्धिमती है। (सार्वनामिक विशेषण)
•उस देवी को मैं आज भी याद करता हूँ। (सार्वनामिक विशेषण)

सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर

यदि इन शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द से पहले हो, तो यह सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं और यदि ये अकेले अर्थात् संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हो तो सर्वनाम कहलाते हैं।

* उसको मैं आज भी याद करता हूँ ।
* यह बुद्धिमती है।

संख्यावाचक एवं परिमाणवाचक विशेषण में अंतर

संख्यावाचक में **गणना** होती है जबकि परिमाणवाचक में **नापा या तौला** जाता है।
संख्यावाचक में संख्या के बाद **कोई संज्ञा या सर्वनाम** शब्द होता है

जबकि परिमाणवाचक में संख्या के बाद **नाप, माप, तौल** की इकाई होती है और उसके बाद पदार्थ (द्रव्यवाचक संज्ञा) होता है।

सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में अंतर

यदि इन शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द से पहले हो, तो यह सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं और यदि ये अकेले अर्थात् संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त हेा तो सर्वनाम कहलाते हैं।

*** उसको मैं आज भी याद करता हूँ ।**
*** यह बुद्धिमती है।**

विशेषणों के रूपान्तर

विशेष्य के लिंग, वचन और कारक के कारण विशेषण में जो विकार उत्पन्न होते हैं, उन्हें विशेषणों के रूपान्तर कहते हैं।

लिंग, वचन और कारक के कारण केवल आकारान्त विशेषणों में ही विकार होता है। आकारान्त विशेषण पुल्लिंग बहुवचन में एकारान्त और स्त्रीलिंग के दोनों वचनों में ईकारान्त हो जाता है। जैसे–

पुल्लिंग एकवचन	पुल्लिंग बहुवचन	स्त्रीलिंग के दोनों वचन
अच्छा	अच्छे	अच्छी
काला	काले	काली
नीला	नीले	नीली
सस्ता	सस्ते	सस्ती

अपवाद : ज़रा, ज़िन्दा, मौजूदा, बढ़िया, पेचीदा आदि आकारान्त विशेषणों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

विशेषणों की तुलना

तुलना की दृष्टि से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ मानी जाती हैं—
1. मूलावस्था 2. उत्तरावस्था 3. उत्तमावस्था।

मूलावस्था—जिस अवस्था में विशेषण अपने मूल रूप में हो अर्थात् विशेष्य की अन्य से तुलना नहीं की जाती, उसे मूलावस्था कहते हैं। जैसे—

राम अच्छा लड़का है।
केला मीठा फल है।

उत्तरावस्था—जिस अवस्था में एक विशेष्य को दूसरे से घटकर या बढ़कर दिखाया जाय उसे उत्तरावस्था कहते हैं। जैसे—

गंगा यमुना से बड़ी है।
राधा रमा से अधिक सुन्दर है।

उत्तरावस्था को दिखाने के लिए से, तर, अपेक्षा, अधिक आदि प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे—

मोहन सोहन से चतुर है।
सोने की अपेक्षा चाँदी सस्ती है।
राधा रमा से अधिक रूपवती है।

उत्तमावस्था—जिस अवस्था में एक विशेष्य को अन्य की तुलना में सबसे घटकर या सबसे बढ़कर बताया जाय उसे उत्तमावस्था कहते हैं। उत्तमावस्था दिखाने के लिए सब, सबसे, सबमें आदि का प्रयोग किया जाता है। जैसे—

गंगा सबसे पवित्र नदी है।
अमरीका सबसे सम्पन्न देश है।

संस्कृत के तत्सम् विशेषणों को तर या तम लगाकर क्रमशः उत्तरावस्था या उत्तमावस्था का विशेषण बना लिया जाता है।

हिन्दी में भी इनका प्रयोग होता है। जैसे—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम

विशेषणों की व्युत्पत्ति

कुछ विशेषण मूलतः विशेषण ही होते हैं। जैसे—काला, लम्बा, ऊँचा, मोटा आदि।

पर कुछ विशेषण संज्ञा, सर्वनाम अथवा क्रिया से बनाये जाते हैं। **विशेषण** बनाने के लिए इन शब्दों के साथ कुछ प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे–

इक–धर्म–धार्मिक,	दिन–दैनिक,	सप्ताह–साप्ताहिक।
वी–तप–तपस्वी,	मन–मनस्वी।	
य, ईय	भारत–भारतीय,	ग्राम–ग्राम्य।
इत–	व्यथा–व्यथित,	ग्राम–ग्राम्य।
ई–	प्रेम–प्रेमी,	धन–धनी।
वान, मान–	धन–धनवान,	बुद्धि–बुद्धिमान।
ला–	रंग–रंगीला।	
रा–	हत्या–हत्यारा।	
आड़ी–	खेल–खिलाड़ी।	
लु–	दया–दयालु,	कृपा–कृपालु।

अभ्यास

1. विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
2. विशेषण कितने प्रकार के हैं? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. विशेषण किसे कहते हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
4. विशेषणों के रूपान्तर से क्या तात्पर्य है? उदाहरण देकर समझाइए।
5. तुलना की दृष्टि से विशेषण की कितनी अवस्थाएँ हैं? एक-एक का उदाहरण दीजिए।
6. सार्वनामिक विशेषण और सर्वनाम में क्या अन्तर है?
7. निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण बताइए–

   (क) वह बच्चा होनहार है।
   वह मेरा भाई है।

   (ख) इस घर में कौन रहता है?
   इसमें कहानियाँ हैं।

सम्बन्धबोधक

अध्याय 15

सम्बन्धबोधक

जो अविकारी शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम के साथ प्रयुक्त होकर वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उनका सम्बन्ध सूचित करते हैं, उन्हें सम्बन्धबोधक कहते हैं। जैसे—

स्कूल के सामने मैदान है। घर के पास नदी है। नदी के किनारे जंगल है।

इन वाक्यों में 'के सामने', 'के पास' और 'के किनारे' सम्बन्धबोधक हैं।

प्रयोग के अनुसार सम्बन्धबोधक अव्ययों के दो भेद हैं—1. सम्बद्ध 2. अनुबद्ध।

सम्बद्ध—जो सम्बन्धबोधक अव्यय विभक्तियों के आगे प्रयुक्त होते हैं, वे सम्बद्ध सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे—

राम के पास कुछ भी नहीं है। इसके सिवा तुम कर ही क्या सकते हो?

इन वाक्यों में 'के पास' और 'के सिवा' सम्बद्ध सम्बन्धबोधक हैं। इनके अतिरिक्त के ऊपर, के नीचे, के भीतर, के उपरान्त, के पीछे, के सिवा, के अनुसार, के योग्य, की अपेक्षा, की जगह, की खातिर, की तरफ, की तरह, से परे, से रहित आदि भी सम्बद्ध सम्बन्धबोधक के उदाहरण हैं।

अनुबद्ध—जो सम्बन्धबोधक अव्यय संज्ञा के बाद विभक्ति रहित रूप में प्रयुक्त होते हैं, वे अनुबद्ध सम्बन्धबोधक अव्यय कहलाते हैं। जैसे—बच्चों समेत। इसमें बच्चों के साथ सम्बन्धकारक की 'के' विभक्ति नहीं है, पर 'बच्चों' शब्द में कारक के कारण रूपान्तर हुआ है। इसी प्रकार मित्रों सहित, किनारे तक आदि।

कुछ सम्बन्धबोधक ऐसे भी हैं जो विभक्ति सहित और विभक्ति रहित दोनों रूपों में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

तार द्वारा समाचार दें। (विभक्ति रहित)

तार के द्वारा समाचार दें। (विभक्ति सहित)

उर्दू के प्रभाव से सम्बन्धबोधक अव्यय का प्रयोग संज्ञा के पूर्व भी होने लगा है। जैसे—

मारे दुख के वह रो पड़ा।

बिना कारण के वह मुझे मारने लगा।

रूप के अनुसार सम्बन्धबोधक के दो भेद हैं–1. मूल 2. यौगिक।

मूल–जो अव्यय स्वतन्त्र रूप से सम्बन्धबोधक होते हैं अर्थात् जो किसी अन्य शब्दभेद या शब्दांश आदि से नहीं बनते, उन्हें मूल सम्बन्धबोधक कहते हैं। जैसे–तक, के बिना, भर, की ओर आदि।

यौगिक–जो सम्बन्धबोधक दूसरे शब्दभेदों से बनते हैं, यौगिक सम्बन्धबोधक कहलाते हैं। जैसे–

संज्ञा से–के नाम, के बदले, के लेखे, की मार्फत आदि।

विशेषण से–के समान, के योग्य, के जैसा, की जबानी आदि।

क्रियाविशेषण–के बाहर, के भीतर, के पास, से दूर आदि।

क्रिया से–के लिए, के मारे, के जाने आदि।

अभ्यास

1. सम्बन्धबोधक से क्या तात्पर्य है? सोदाहरण समझाइए।
2. प्रयोग के अनुसार सम्बन्धबोधक के कितने भेद हैं? प्रत्येक का परिचय दीजिए।
3. रूप के अनुसार सम्बन्धबोधक के कितने भेद हैं? प्रत्येक का परिचय दीजिए।

विस्मयादिबोधक

विस्मयादिबोधक की परिभाषा

ऐसे शब्द जो वाक्य में आश्चर्य, हर्ष, शोक, घृणा आदि भाव व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त हों, वे विस्मयादिबोधक कहलाते हैं। ऐसे शब्दों के साथ विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) का प्रयोग किया जाता है।

जैसे: अरे!, ओह!, शाबाश!, काश! आदि।

विस्मयादिबोधक के उदाहरण :

- **अरे!**, आप कौन हो!
- **हे राम**, यह कैसे हुआ!
- **धिक्कार** है तुम्हे!
- **हाय**, मुझे देर हो गयी!

जैसा कि आप ऊपर दिए गए वाक्यों में देख सकते हैं, **अरे, हे राम, हाय** आदि शब्दों का प्रयोग हुआ है। इन शब्दों से किसी तीव्र भावना को जताने का प्रयास किया जा रहा है। अतः ये शब्द विस्मयादिबोधक कहलायेंगे।

विस्मयादिबोधक के भेद :

1. विस्मयबोधक—वाह! हैं! ऐं, ओहो! वाह-वा!
2. हर्षबोधक—अहा! आहा! अहह! धन्य! शाबाश!
3. शोकबोधक—हाय! हा-हा! आह! ऊह! हाय-हाय!
4. तिरस्कारबोधक—छिः! धत्! अरे! धिक्! चुप!
5. क्रोधसूचक—चुप! हट! क्यों! अबे!
6. स्वीकारबोधक—ठीक! भला! जी हाँ! अच्छा!
7. सम्बोधनसूचक—अरे! हो! अजी! लो! अहो!

समुच्चयबोधक

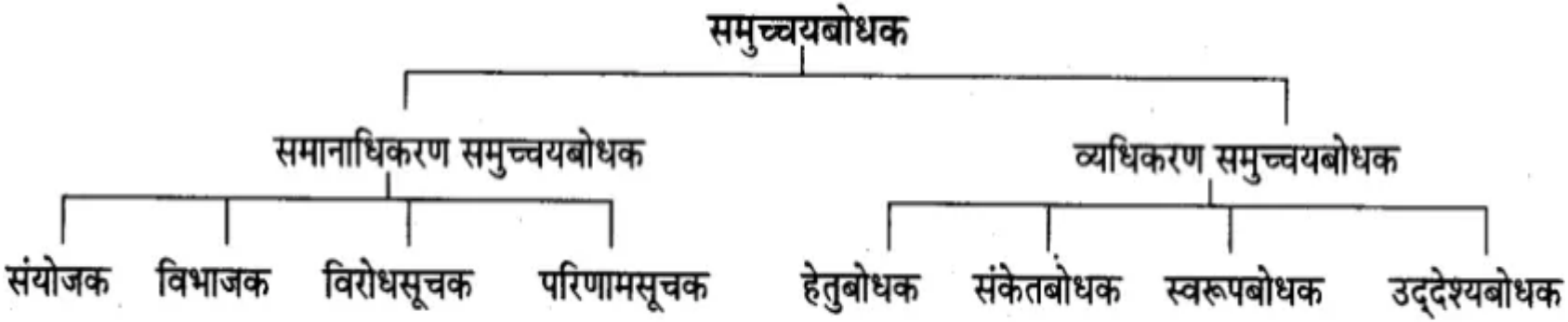
समुच्चयबोधक
समानाधिकरण समुच्चयबोधक
व्यधिकरण समुच्चयबोधक
संयोजक
विभाजक
विरोधसूचक
परिणामसूचक
हेतुबोधक
संकेतबोधक
स्वरूपबोधक
उद्देश्यबोधक

समुच्चयबोधक की परिभाषा

- ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक शब्द, वाक्य या वाक्यांशों को जोड़ने का काम करते हैं, वे शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं। इन समुच्चयबोधक शब्दों को योजक भी कहा जाता है।
- **जैसे:** और, व, एवं, तथा, या, अथवा, किन्तु, परन्तु, कि, क्योंकि, जो कि, ताकि, हालाँकि, लेकिन, अत:, इसलिए आदि।
- श्रुति और नेहा पढ रही है।
  मुझे टेपरिकार्डर या घड़ी चाहिए।

समुच्चयबोधक के दो प्रमुख भेद

- 1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक (Coordinate Conjunction)
  2. व्यधिकरण समुच्चयबोधक (Subordinate Conjunction)
- 1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक-ऐसे समुच्चयबोधक शब्द जो सामान वाक्य, वाक्यांशों को जोड़ने का काम करते हैं, ऐसे शब्द समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं।**जैसे:** और, तथा, तो आदि।
-

- समानाधिकरण समुच्चयबोधक के निम्नलिखित चार भेद हैं :
- (क) संयोजक
- (ख) विभाजक
- (ग) विरोधसूचक
- (घ) परिणामसूचक।

सयोंजक समानाधिकरण समुच्चयबोधक

ऐसे शब्द जो दो या दो से अधिक वाक्यों को आपस में परस्पर जोड़ने का काम करते हैं, वे शब्द सयोंजक समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं।

- **जैसे:** भी, व,और, तथा, एवं आदि।
- इतिहास एवं भूगोल दोनों का अध्ययन करो।

विभाजक या विकल्प समानाधिकरण समुच्चयबोधक

- जो अव्यय पद शब्दों, वाक्यों या वाक्यांशों में विकल्प प्रकट करते हैं, वे 'विकल्प' या 'विभाजक' कहलाते हैं;
- जैसे : कि, चाहे, अथवा, अन्यथा, या, नहीं, तो आदि।
- तुम ढंग से पढ़ो अन्यथा फेल हो जाओगे।

विरोधसूचक समानाधिकरण समुच्चयबोधक

- ऐसे शब्द जो दो विरोधी कथन, वाक्य या उपवाक्यों को जोड़ने का काम करते हैं, ऐसे शब्द विरोधसूचक समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं।
- **जैसे:** वरन, पर, परन्तु, किन्तु, मगर, बल्कि, लेकिन आदि।
- वह आया परंतु देर से।

परिणामसूचक समानाधिकरण समुच्चयबोधक

- ऐसे शब्द जो दो उपवाक्यों को जोड़ते हैं एवं जोड़ने के बाद उन दोनों वाक्य का परिणाम का बोध कराते हैं, ऐसे शब्द परिनामसूचक समानाधिकरण समुच्चयबोधक शब्द कहलाते हैं।
- **जैसे:** इस कारण, अत:, अतएव, फलत:, परिणाम स्वरूप, इसलिए, फलस्वरूप, अन्यथा, इसीलिए आदि।
- इस फल में बहुत ज्यादा कीड़े होते हैं **अतएव** ये खाने के लिए ठीक नहीं हैं।

व्यधिकरण समुच्चयबोधक

- वे संयोजक जो एक मुख्य वाक्य में एक या अनेक आश्रित उपवाक्यों को जोड़ते हैं, व्यधिकरण समुच्चयबोधक' कहलाते हैं;
- जैसे : **जैसे:** इसलिए, यद्यपि, तथापि आदि।
  व्यधिकरण समुच्चयबोधक के मुख्य चार भेद हैं :
  (क) हेतुबोधक या कारणबोधक
  (ख) संकेतबोधक
  (ग) स्वरूपबोधक
  (घ) उद्देश्यबोधक

हेतुबोधक - कारणसूचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक

- इन शब्दों से दो जुड़े हुए वाक्यों में हो रहे काम के कारण का पता चलता है। यानी दूसरा वाक्य पहले वाक्य का समर्थन करता है एवं हमें कारण का बोध होता है, उसे कारणवाचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।
- **जैसे:** क्योंकि, जोकि, इसलिए कि, इस कारण, इस लिए, चूँकि, ताकि, कि आदि।
- वह बहुत सुशील है **इसलि**ए मुझे पसंद है।

संकेतबोधक व्यधिकरण समुच्चयबोधक

प्रथम उपवाक्य के योजक का संकेत अगले उपवाक्य में पाया जाता है। ये प्रायः जोड़े में प्रयुक्त होते हैं;

- **जैसे:** यदि, तो, तथापि, जा, यद्पि, परन्तु आदि।
- यद्यपि वह बुद्धिमान है तथापि आलसी भी।

स्वरूपबोधक व्यधिकरण समुच्चयबोधक

- जिन अव्यय पदों को पहले उपवाक्य में प्रयुक्त शब्द, वाक्यांश या वाक्य को स्पष्ट करने हेतु प्रयोग में लाया जाए, उसे 'स्वरूपबोधक' कहते हैं; जैसे : यानी, अर्थात् , यहाँ तक कि, मानो आदि।
- सात दिन **यानी** एक सप्ताह मुझे वहां रुकना पडेगा।

उद्देश्यवाचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक

- ऐसे शब्द जो किन्हीं दो वाक्यों को जोड़कर उनका उद्देश्य प्रकट करते हैं, वे शब्द उदेश्यवाचक व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। **जैसे:** ताकि, कि, जो, इसलिए कि, जिससे आदि।
- मेहनत करो जिससे कि प्रथम आ सको।

सर्वनाम

परिभाषा, भेद व उदाहरण

सर्वनाम

पुरुषवाचक निश्चयवाचक अनिश्चयवाचक

प्रश्नवाचक सम्बन्धवाचक निजवाचक

सर्वनाम - Sarvanam (Pronoun)

जिन शब्दों का प्रयोग संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

उदाहरणः में. तू. आप (स्वय), यह, वह, जो, कोई, कोई, कुछ, कौन, क्या।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के मुख्य रूप से छः भेद हैं:

(१) पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

(२) निजवाचक सर्वनाम (Reflexive Pronouns)

(३) निश्चयवाचक सर्वनाम(Demonstrative pronouns)

(४) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronouns)

(५) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronouns)

(६) प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative pronouns)

पुरुषवाचक सर्वनाम (Purushvachak Sarvanam)

जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा के स्थान पर किया जाता है उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं, तुम, हम, आप, वे।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं:

उत्तम पुरुष (प्रथम पुरुष)

इन सर्वनाम का प्रयोग बात कहने या बोलने वाला अपने लिए करता है।

उदाहरण: मैं, मुझे, मेरा, मुझको, हम, हमें, हमारा, हमको।

मध्यम पुरुष

इन सर्वनाम का प्रयोग बात सुनने वाले के लिए किया जाता है।

उदाहरण: तू, तुझे, तेरा, तुम, तुम्हे, तुम्हारा ।

आदर सूचक: आप, आपको, आपका, आप लोग, आप लोगों को आदि।

अन्य पुरुष

इन सर्वनाम का प्रयोग बोलने वाला वाला अन्य किसी व्यक्ति के लिए करता है।

उदाहरणः वह, उसने, उसका, उसे, उसमें, वे, इन्होने, उनको, उनका, उन्हें, उनमें आदि।

निजवाचक सर्वनाम (Nijvachak Sarvanam)

जो सर्वनाम शब्द करता के स्वयं के लिए प्रयुक्त होते हैं उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः स्वयं, आप ही, खुद, अपने आप।

उदाहरणः

उसने अपने आप को बर्बाद कर लिया।

मैं खुद फोन कर लूँगा।

तुम स्वयं यह कार्य करो।

श्वेता आप ही चली गयी।

नोटः इसके 'आप' का प्रयोग का अपने लिए/ स्वयं होता है आदर सूचक 'आप' के लिए नहीं।

निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है उसे निश्चयकवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः यह, वह, ये, वे।

उदाहरणः

यह मेरी घडी है।

वह एक लड़का है।

वे इधर ही आ रहे हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित व्यक्ति या वस्तु का बोध नहीं होता है उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः कुछ, किसी ने (किसने), किसी को, किन्ही ने, कोई, किन्ही को।

उदाहरणः

लस्सी में कुछ पडा है।

भिखारी को कुछ दे दो।

कौन आ रहा है।

राम को किसने बुलाया है।

शायद किसी ने घंटी बजायी है।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम से वाक्य में किसी दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध ज्ञात होता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसः जो-सो, जहाँ-वहाँ, जैसा-वैसा, जौन- तौन।

उदाहरणः

जहाँ चाह वहाँ राह।

जैसा बोओगे वैसा काटोगे।

वह कौन है जो रो पडा।

जो सो गया वो खो गया।

जो करेगा सो भरेगा।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम से वाक्य में प्रश्न का बोध होता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसेः कौन, कहाँ, क्या, कैसे।

उदाहरण :

रमेश क्या खा रहा है।

कमरे मैं कौन बैठा है।

वे कल कहाँ गए थे।

आप कैसे हो।

नोट : कुछ सर्वनाम शब्द ऐसे भी होते हैं संयुक्त सर्वनाम की कोटि में रखा गया हैं।

जैसे : जो कोई, सब कोई, कुछ और, कोई न कोई।

उदाहरण :

जो कोई आए उसे रोक लो।

जाओ, वहाँ कोई न कोई तो मिल ही जायेगा।

देखो, कुछ और लोग वहाँ हैं।

कोई- कोई तो बिना बात बहस करता है।

कौन- कौन आ रहा है।

किस- किस कमरे में छात्र पढ़ रहे है।